बिहार सरकार
मुख्यमंत्री का कार्यालय
(जनसंपर्क कोषांग)
प्रेस विज्ञप्ति

संख्या–cm-35
16/01/2020

प्रदूषण पर नियंत्रण, जल का संरक्षण एवं हरियाली को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे कार्यों से भावी पीढ़ी को काफी लाभ होगा :– मुख्यमंत्री

➢ केंद्रीय एवं राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के 64वें सम्मेलन का मुख्यमंत्री ने किया उद्घाटन

पटना, 16 जनवरी 2020 :– मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने बिहार म्यूजियम सभागार में केंद्रीय एवं राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के दो दिवसीय (16–17 जनवरी, 2020) 64वें सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सबसे पहले मैं आप सबों का केंद्रीय एवं राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के पटना में हो रहे इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आपका अभिनंदन करता हूं। आज से 28 वर्ष पहले अविभाजित बिहार में 1992 में इसका आयोजन किया गया था। दो दिवसीय इस सम्मेलन में प्रदूषण की स्थिति, पर्यावरण संकट से संबंधित विभिन्न बिंदुओं और उसके समाधान पर चर्चा होगी। उन्होंने कहा कि हमलोग राज्य में पर्यावरण संकट, प्रदूषण की स्थिति से निपटने के लिए कदम उठा रहे हैं। हाल ही में इस विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन पटना में हुआ था। उन्होंने कहा कि देश भर में इस विषय पर काम हो रहे हैं। इसके लिए कानून भी बनाए गए हैं। हरेक राज्य भी प्रदूषण की स्थिति से निपटने के लिए कोशिश कर रहे हैं। बिहार भी इस बात को लेकर काफी सजग है। उन्होंने कहा कि राज्य के तीन शहरों को प्रदूषण के लिए चिन्हित किया गया था उस पर भी हमलोगों ने बैठक कर चर्चा की है। वाहन प्रदूषण की रोकथाम के लिए पंद्रह वर्ष के पुराने डीजल वाहनों के परिचालन को बंद करने का निर्णय लिया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले वर्ष जुलाई माह में हमने खुद इलेक्ट्रिक वाहन से पटना में सफर शुरु किया है। उप मुख्यमंत्री, कुछ मंत्री एवं कुछ वरीय पदाधिकारी को भी इलेक्ट्रिक वाहन उपलब्ध कराया गया है। इलेक्ट्रिक वाहन के प्रयोग से वाहनों से होने वाले प्रदूषण में कमी आएगी। उन्होंने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए कानून बनाए गए हैं लेकिन सबसे बड़ी जरुरत लोगों को इसके बारे में जानकारी देने की है, उन्हें जागरुक करने की है। लोगों के जागरुक होने से भी कानून का ठीक ढंग से पालन हो पाता है। उन्होंने कहा कि यहां विकास के कार्य किए जा रहे हैं। बिहार की आबादी तो अधिक है साथ ही उनकी जरुरतें भी बढ़ रही हैं। लोगों की आमदनी बढ़ रही हैं। सड़कें अच्छी होने से गाड़ियों की संख्या बढ़ी है और इससे वाहन प्रदूषण भी बढ़ा है। हमलोग पर्यावरण के अनुकूल विकास के कार्य की योजना बनाते हुए काम कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की आबादी का घनत्व अधिक है। राज्य का प्रजनन दर अधिक है। जब हम सरकार में आए थे तो सर्वे से जानकारी मिली थी कि राज्य का प्रजनन दर 4.3 है जो घटकर अब 3.2 हो गया है। अध्ययन और आंकलन से पता चला कि पति और पत्नी में अगर पत्नी मैट्रिक पास है तो देश और बिहार दोनों का प्रजनन दर 02 है। पति और पत्नी में

अगर पत्नी इंटर पास है तो देश का प्रजनन दर 1.7 और बिहार का प्रजनन दर 1.6 है। हमलोगों का मानना है कि अगर लड़कियों को कम से कम इंटर तक शिक्षित करा देंगे तो जनसंख्या नियंत्रण में सुविधा होगी। उन्होंने कहा कि राज्य के बंटवारे के बाद हरित आवरण 9 प्रतिशत था, सरकार में आने के बाद हरियाली मिशन की शुरूआत कर 19 करोड़ पौधे लगाए गए। राज्य की संस्थाओं के अध्ययन से पता चलता है कि राज्य का हरित आवरण क्षेत्र 15 प्रतिशत तक पहुंच गया है और इसे आगे बढ़ाने के लिए भी हमलोग काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन का असर मौसम पर भी साफ दिखने लगा है। जहां पहले राज्य का औसत वर्षापात 1200 से 1500 मि0मी0 था। पिछले 30 वर्षों में घटकर यह 1027 मि0मी0 हुआ और पिछले 13 वर्षों में घटकर 901 मि0मी0 पर आ गया है। राज्य में कभी बाढ़ की स्थिति तो कभी सुखाड़ की स्थिति बनी रहती है। वर्ष 2018 में राज्य के 534 प्रखंडों में से 280 प्रखंड सूखाग्रस्त घोषित किए गए थे। पिछले वर्ष जुलाई माह में तीव्र वर्षापात फिर उसके बाद सुखाड़ की स्थिति और सितंबर माह में अतिवृष्टि से बाढ़ की स्थिति बनी और कई शहरों में जलजमाव की स्थिति भी बनी। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के प्रति लोगों को सतर्क रहना पड़ेगा और हमलोग इसके लिए लगातार काम कर रहे हैं। वायु गुणवत्ता अनुश्रवण केंद्र की संख्या बढ़ायी गई है। ठोस अवशिष्ट प्रबंधन के लिए भी काम किए जा रहे हैं। नालंदा जिले के राजगीर प्रखंड के भूई ग्राम पंचायत में जीविका समूह के द्वारा गीला और ठोस कचरे को अलग–अलग करके बेहतर ढंग से इसका प्रबंधन किया गया है, जिससे 85 प्रतिशत कचरे का किसी न किसी रुप में फिर से इस्तेमाल किया जाता है। इस मेथड को अन्य जगह भी प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। लिक्विड वेस्ट मैनेजमेंट के लिए भी काम किया जा रहा है। गंगा नदी में नाले के पानी को जाने से रोकने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं। नाले के पानी को सिवरेज ट्रिटमेंट प्लांट के माध्यम से साफ कर कृषि कार्य के लिए उपयोग किया जाएगा। बचपन में हम भी गंगा नदी के पानी को अपने घर पर पीने के लिए प्रयोग में लाते थे और आज स्थिति बदल गई है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग के संबंध में यहां पर लोगों ने चर्चा की है। प्लास्टिक का उपयोग आज की दिनचर्या में हर जगह शामिल है। इसका समाधान ढूंढ़ने के लिए हम सबको मिलकर काम करना होगा। आज कल धूलकण के संकट से भी प्रदूषण में वृद्धि हो रही है। ईंट–भट्ठे के प्रयोग को राज्य में नियंत्रित करने के लिए कड़े नियम बनाए गए हैं। अब यहां के सरकारी भवनों के निर्माण में फ्लाई एस0 ब्रिक्स का प्रयोग किया जा रहा है और इसके लिए लोगों को भी प्रेरित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जलवायु में हो रहे परिवर्तन, पर्यावरण संकट के समाधान के लिए हमलोगों ने 13 जुलाई 2019 को सभी दलों के विधायकों एवं विधान पार्षदों की बैठक विधानसभा अध्यक्ष, विधान परिषद के कार्यकारी सभापति की मौजूदगी में की थी। इस संयुक्त बैठक में जल–जीवन–हरियाली अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। जल–जीवन–हरियाली के नामकरण का मतलब है जल और हरियाली है तभी जीवन सुरक्षित है। मनुष्य, पशु–पक्षी, जीव–जंतु या किसी के भी जीवन के सुरक्षित रहने के लिए एक तरफ जल तो एक तरफ हरियाली जरुरी है। इस अभियान में 11 अंशों को शामिल किया गया है। इसमें विभिन्न कार्यक्रमों के साथ–साथ लोगों को जागरुक करने के लिए सतत् अभियान चलाते रहने को भी शामिल किया गया है। इस पर अगले तीन वर्षों में 24 हजार 524 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। हरियाली को बढ़ाने के लिए 8 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे। भूजल स्तर को संरक्षित करने के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग का काम किया जा रहा है। आपलोग यहां आए हैं तो यहां की विभिन्न जगहों का भी भ्रमण कर लें। आप राजगीर जाएंगे तो देखेंगे कि वहां ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के पास तीन–चार बड़े–बड़े और बेहतर तालाब हैं, जिसमें वर्षा जल संचयित रहता है। उसका उपयोग ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के साथ–साथ अन्य कामों के लिए किया जाता है। अगर दो वर्षों तक भी वर्षा नहीं हुई

तो उस जल से ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का काम संचालित होता रहेगा। वर्ष 1999 में अटल जी की सरकार के समय, जॉर्ज फर्नांडिस जी के रक्षा मंत्रित्वकाल में हमने रेल मंत्री रहते हुए उस तालाब के बारे में सुझाव दिया था। वर्ष 2016 से इस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का निर्माण कार्य शुरु है। उन्होंने कहा कि जल–जीवन–हरियाली अभियान में जीर्णोद्धार एवं जल संचयन का काम शुरु किया गया है। उन्होंने कहा कि वर्षा ऋतु के समय चार माह तक गंगा नदी के पानी को स्टोर कर उसका शुद्धिकरण करते हुए गया, बोधगया, राजगीर में पेयजल के रुप में लोगों को उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा अक्षय ऊर्जा है। इसे प्रोत्साहित करने के लिए सभी सरकारी भवनों के ऊपर सोलर प्लेट लगाए जा रहे हैं। लोग भी अपने निजी भवनों में सोलर प्लेट भी लगाने लगे हैं। उन्होंने कहा कि बिहार गरीब राज्य है लेकिन हमलोग मन से गरीब नहीं है। आप सभी आए हुए प्रतिनिधियों की हर सुविधा का ध्यान रखा जाएगा। आप सब यहां राज्य के कुछ जगहों का भ्रमण अवश्य कर लें। बिहार म्यूजियम में जो यह सम्मेलन हो रहा है यह देश का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय म्यूजियम है। बोधगया में 65 एकड़ की बुद्ध वाटिका बनायी जा रही है उसमें ऑर्टिजियन वॉल है। वहॉ बॉयो डायरभरसिटी पार्क भी बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में वहां वृक्षारोपण किए जा रहे हैं। राजगीर में घोड़ाकटोरा को इको टूरिज्म के रुप में विकसित किया जा रहा है। जू–सफारी का निर्माण कराया जा रहा है, इसके बगल में नेचर सफारी का भी निर्माण कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 3–4 वर्षों के बाद बिहार में फिर इस सम्मेलन का आयोजन कराएं, तब यहां और कई विकास के स्वरुप दिखेंगे। उन्होंने कहा कि 19 जनवरी को जल–जीवन–हरियाली अभियान के पक्ष में बनने वाली मानव श्रृंखला में 4 करोड़ से अधिक संख्या में और 16 हजार किलोमीटर से अधिक की लंबाई में लोग शामिल होंगे। आप सब भी इस श्रृंखला में शामिल हों। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के संरक्षण के लिए सभी प्राकृतिक चीजों का ठीक ढंग से उपयोग हो। साथ ही वातावरण को भी ठीक रखना होगा और प्रदूषण नियंत्रण के लिए कार्य करते रहना होगा। उन्होंने कहा कि नियमों का ठीक ढंग से पालन करने के साथ–साथ लोगों को जागरुक करते रहना भी जरूरी है। इस सम्मेलन के दौरान प्रदूषण नियंत्रण के लिए चर्चा से जो सार्थक चीजें सामने आएंगी उससे सबको फायदा होगा। मुझे खुशी है कि इस सम्मेलन का बिहार में आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रदूषण पर नियंत्रण, जल का संरक्षण एवं हरियाली को बढ़ावा देने के लिए जो काम किये जा रहे हैं, उससे भावी पीढ़ी को काफी लाभ होगा।

इस अवसर पर बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के अध्यक्ष श्री अशोक कुमार घोष ने पुष्प–गुच्छ, प्रतीक चिन्ह, एवं अंगवस्त्र भेंटकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। कार्यक्रम के पश्चात मुख्यमंत्री के साथ देश भर से आए प्रतिनिधियों की ग्रुप फोटोग्राफी भी हुयी।

सम्मेलन को उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के सचिव श्री सी0के0 मिश्रा, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के अध्यक्ष श्री एस0पी0 सिंह परिहार, बिहार सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के अध्यक्ष श्री अशोक कुमार घोष ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के परामर्शी श्री अंजनी कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री चंचल कुमार, योजना एवं विकास विभाग के सचिव श्री मनीष कुमार वर्मा, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के सदस्य सचिव श्री आलोक कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह, सहित विभिन्न राज्यों से आए अध्यक्ष एवं सचिव सदस्यगण एवं अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

******